

## भूमिका

प्रकट हो कि पहिले समय में इस आर्यावर्त देश में लड़कियों के भी लिखने पढ़ने का प्रचार था और बहुत कर के यह प्रचार राजा भोज के समय में बढ़ गया था फिर राज्यों की उलट पलट से इस प्रचार का ऐसा मलियामेट हुआ कि लड़कियाँ तो अलग रहीं लड़कों से भी यह दूर जाता रहा और देश में मूर्खता का अंधेरा छा गया। अब जब से अंगरेज़ी सरकार का राज्य हुआ है तब से इस राज्य के प्रभाव से पढ़ने लिखने का प्रचार फिर हुआ और पूर्व के समय की अपेक्षा अब उसकी बड़ी वृद्धि है और प्रतिदिन यह प्रचार बढ़ता जाता है अब जो यही दशा चैन-चान और अंगरेज़ी सरकार के ध्यान की सौ दो सौ वर्ष रही तो निश्चय है कि आर्यावर्त फिर अपनी प्रसिद्धि पा जावेगा वरन उससे भी उच्च पद को पा जावेगा। यह सब जानते हैं कि सरकार अंगरेज़ी का न्याय स्वाभाविक है इसलिये वह यह चाहती है कि जैसे लड़के पढ़ते लिखते हैं वैसे ही लड़कियाँ भी इस विद्यारत्न से निराश न रहें तथा च कुछ समय से प्रतापी सरकार का इधर भी ध्यान है और पहिले की अपेक्षा लड़कियों के पढ़ने लिखने का प्रचार भी अधिक हो गया है पर उन के पढ़ने के लिए अच्छी-अच्छी पुस्तकें नहीं हैं। इन दिनों मुसलमानों की लड़कियों के पढ़ने के लिए तो एक-दो पुस्तकें जैसे मिरातुल उरूस आदि बन गई हैं परन्तु हिन्दुओं व आर्यों की लड़कियों के लिए अब तक कोई ऐसी पुस्तक देखने में नहीं आई कि जिसे उनको जैसा चाहिए वैसा लाभ पहुँचे और पश्चिम उत्तर देशाधिकारी श्रीमन्महाराजाधिराज लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की यह इच्छा है कि कोई पुस्तक ऐसी बनाई जाए कि उससे हिन्दुओं व आर्यों की लड़कियों को भी लाभ पहुँचे और उनकी शासन भी भली-भाँति हो। सो हम ईश्वरीप्रसाद मुद्दरिस रियाजी और कल्याण राय मुद्दरिस अव्वल उर्दू मदरसह दस्तूर तालीम मेरठ ने बड़े सोच-विचार और ज्ञान-ध्यान के पीछे दो वर्ष में इस पुस्तक को उसी ध्यान से बनाया - निश्चय है कि इस पुस्तक से हिन्दुओं की लड़कियों को हिन्दुओं की रीति-भाँति के अनुसार लाभ पहुँचे और सुशील हों और जितनी (बुरी) चालें और पाखण्ड जिनका आजकल मूर्खता के कारण प्रचार हो रहा है उनके जी से दूर हो जाएँगे और बुरी प्रवृत्तियों को छोड़कर अच्छी प्रवृत्तियाँ सीखेंगी और लिखने पढ़ने और सद्गुण सीखने की रुचि होगी क्योंकि प्रत्येक बुराई का दृष्टांत ऐसी रीति से लिखा गया है कि उसके पढ़ने और सुने से उनके स्वभावों और उनकी मूर्खताओं के स्वभावों में साहस उत्पन्न होगा और जब साहस उत्पन्न हुआ तो छोड़ देना और छुड़ा देना उस बुराई का कुछ बात नहीं है और यों ही प्रत्येक भलाई के बहुत से दृष्टांत लिखे गये हैं कि वह भलाई की ओर रुचि दिलाते हैं। निदान बहुत-से उत्तम-उत्तम फल इस पुस्तक से निकलते हैं।

अपने मुँह से अपनी पुस्तक की बड़ाई निकालना तो छोटा मुँह और बड़ी बात है पर नीतिज्ञ और गुणज्ञ लोगों से यह आशा है कि वह अवश्य हमारे इस सोच विचार को नीतिपूर्वक देखेंगे। सो इसी ध्यान से वह पुस्तक पश्चिमोत्तर देशी स्त्रीयुत डायरेक्टर ऑफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन की भेंट करते हैं, क्या आश्चर्य है कि अंगीकार हो और हमारी प्रतिष्ठा बढ़ाई जाय। निदान यह पुस्तक लड़कियों के लिए है इसलिए उसको ऐसी सीधी बोली में लिखा है जिसको हिन्दुओं की लड़कियों और स्त्रियाँ बेरोक समझ सकती हैं और उनकी प्रतिदिन की बोलचाल ऐसी होती है जैसी इस पुस्तक में है। यद्यपि यह पुस्तक हिन्दुओं की लड़कियों को लाभ पहुँचाने की नियत से बनाई गई है पर उसके आशय ऐसे हैं कि जिनके पढ़ने से लड़के भी सुशील होंगे।